International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

रिसायतकालीन टोंक की संस्कृति

उर्मिला मीना, व्याख्याता– (इतिहास विभाग)

शहीद कप्टन रिपुदमनसिंह, राजकीय महाविद्यालय, सवाई माधोपुर

भूतपूर्व टोंक रियासत की राजधानी रह चुके इस टोंक शहर की स्थापना 1806 में अमीर खाँ पिण्डारी ने की थी प्रान्त व देश राजस्थान, भारत

टोंक की जनसंख्या 1,65,363 यहॉ की मुख्य भाषा है राजस्थानी, हिन्दी निर्देशांक $26^0 10$ $75^0 47$ 12617N7575^{0}E टोंक भारत के राजस्थान राज्य के टोंक जिले में स्थित एक नगर व लोकसभा क्षेत्र है। टोंक बनास नदी के ठीक दक्षिण भाग में स्थित है। इस भूतपूर्व टोंक रियासत की राजधानी रह चुके इस शहर की स्थापना 1806 ई. सन् में अमीर खॉ पिझडारी ने की थी। यह छोटी पर्वत श्रॅखला की ढलानों पर स्थित है। इस के ठीक दक्षिण में किला और नये बसे क्षेत्र है। यहॉ का आस–पास का क्षेत्र मुख्यतः खुला और समतल है। इस क्षेत्र में बिखरो हुई चट्टानी पहाड़ियॉ स्थित है।

यहॉ मुर्गीपालन और मत्स्य पालन होता है। यहॉ पर अभ्रक और बेटिलियन का खनन होता है। भूतपूर्व टोंक रियायत में राजस्थान एवं मध्य भारत के छह अलग–अलग क्षेत्र आते थे।

जिन्हें पठान सरदार अमीर खॉ ने 1798 से 1817 के बीच हासिल किया था। सन 1948 ई. सन में यह राजस्थान राज्य का अंग बन गया था।

टोंक का पूर्व इतिहास– टोंक का यह क्षेत्र महाभारत काल में ''संवाद लक्ष'' के नाम से जाना जाता था। यहां से टोंक के इतिहास से जुड़े के खण्डहरों से तीसरी शताब्दी के सिक्के मिले हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

टोंक रियासत को कृशि व खनिज–

टोंक इस क्षेत्र का प्रमुख कृषि बाजार एवं निर्माण केन्द्र है। ज्वार, गेंहू, चना मक्का, कपास और तिलहन यहॉ की मुख्य फसलें हैं।

खातौली–यह खातौली गांव टोंक की उनियारा तहसील के पास स्थित है। यहॉ पर ''विद्युत'' बनाने का प्लांट है। इसमें सरसों के नष्ट होने वाले भाग से बिजली का उत्पादन किया जाता है। इस प्रक्रिया के आस–पास के लोगों को रोजगार मिलता हैं।

टोंक रियायत का उद्योग और व्यापार यहॉ पर सूती वस्त्र की बुनाई, चर्म–शोधन और नमदा बनाने की हस्तकला यहॉ के मुख्य उद्योग है। टोंक में राजस्थान की मिर्च मण्डी मौजूद है। इसके अलावा यहां से निकलने वाली मिर्च और खरबूजे पूरे राजस्थान में प्रसिद्व हैं।

टोंक का कॉलेज– यहॉ का कॉलेज महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से सम्बन्ध है। टोंक के निवाई स्थान में ''वनस्थली विद्यापीठ'' है। यह महिलाओं के लिए निवासीय विश्वविद्यालय है। जो महिलाओं के लिए कई प्रकार के उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम उपलब्ध कराती है। इसी स्थान पर डॉक्टर के एन मोदी विश्वविद्यालय भी स्थित है। टोंक में बी.एड, बी.एससी आदि के कई कॉलेज स्थित है। यहॉ पर सरकारी यूनानी मेडिकल कॉलेज व अस्पताल भी हैं।

कुप्रथा– टोंक, अजमेर, बूंदी, भीलवाड़ा और बॉरा के देहाती क्षेत्रों में एक प्रथा '' नाता'' के नाम से प्रचलित है। इस प्रथा के अन्तर्गत एक वैवाहिक महिला किसी दूसे पुरूष के साथ रहने और शारीरिक सम्बन्ध बना सकती है। जब उसके पहले पति को मुआवजा की रकम दे दी जाये। इस पैसे को झगड़ा कहा जाता है। यह प्रक्रिया एक प्रकार से विवाह के समय खर्च की भरपाई होती हैं।

टोंक शहर सबसे लोकप्रिय जिला देव–धाम जोधपुरिया देवनारायण भगवान मन्दिर हैं।

राजधानी– टोंक, क्षेत्रफल 7194 कि.मी. यहॉ का घनत्व– 198 कि.मी. टोंक के उपविभागों के नाम तहसील है। यहॉ की उपविभागों में नई तहसील नगर फोर्ट बनी 31 मई 2021 को अब कुल है–09

टोंक की मुख्य भाषायें हैः– हिन्दी, नागर, चोल, चौसासी एवं राजस्थानी

टोंक जिला भारत के राजस्थान राज्य का एक जिला है। जिले का मुख्यालय टोंक है। राजस्थान सरकार के उप मुख्यमंत्री माननीय श्री सचिन पायलट जी यहॉ के विधायक है। इन्होंने 2018 के विधानसभा चुनाव में वसुंधरा सरकार के नम्बर 03 के मंत्री श्री यूनूस खांन साहब को भारी मतों से हराया था।

सन् 1743ई सन् में जयपुर राज घराने के राजा मानसिंह कछवाह ने बोला नाम के ब्राहाम्ण को टोरी व टोंकरा के 12 ग्राम भूमि के रूप में स्वीकृत किये जिनको मिलाकर भोजा ब्राहाम्ण ने इसका नामकरण टोंक किया।

टोंक के महाराज माधोसिंह ने टोंक परगना माधोराव होलकर को सहायता करने के बदले दे दिया जो अन्त में सम्वत् 1863 विक्रम तदानुसार 1817 में नवाब अमीर खॉ के नवाब बनने के बाद टोंक एक इस्लामी रियासत में तब्दील हो गया। इसमें टोंक शहर, अलीगढ़, रामपुरा, सिरोज, छबड़ा और निम्बाहेड़ा के परगने शामिल कर दिये गये थे।

नवाब सआदत अली खॉ के समय टोंक में आई बिजली, फैली विकास की रोशनी नवाब सआदत अली खॉ का कार्यकाल 1930 से 1947 तक रहा उसके कार्यकाल में टोंक के विकास को तय किया गया था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

टोंक के उपनाम– नवाबों की नगरी, राजस्थान का लखनऊ, अदब का गुलाब, अख्तर शेर्यश की नगरी, मीठे खरबूजे का चमन, हिन्द–मुस्लिम एकता का मुखौटा प्राचीन नाम तथा प्राचीन भारत का टाटा नगर एवं सपादलक्ष आदि।

यह रियासत काल की एक मात्र राजस्थान राज्य की मुस्लिम रियासत हैं।

टोंक रियासत के दर्शनीय स्थल श्री देवनारायण भगवान मंदिर, मॉशी बांध, मनोहरपुरा के त्रिवेणी जिनम है, मांशी, बांदी, केराकशी स्थित भव्य मंदिर यहां इनका मेला भरता हैं।

चान्दणी माता मन्दिर, देवजी के राजा चान्दली गांव में हिंगलाज माता का विशाल मन्दिर स्थित हैं।

डिग्गी कल्याण मन्दिर डिग्गी मालपुरा यहॉ पर भाद्रपद शुक्ल एकादशी को विशाल मेला लगता हैं।

अरबी फारसी शोध संस्थान (टोंक) इसकी स्थापना 04 दिसम्बर 1978 को हुई यहॉ पर विश्व की सबसे बड़ी कुरान बनाई थी।

सुनहरी कोठी टोंक– यह टोंक में बड़े कुए के पास नगर बाग में रतन, कॉच व सोने की झाल देकर बनवाई गयी थी। पहले इसे ''शीशमहल'' के नाम से जाना जाता था।

फ्रेजर पूज टोंक, कल्पवृक्ष बालुन्दा नगर दुर्ग के पास मण्डप ऋषि की तपोभूमि मण्डप ऋषि की तपोभूमि को लघु पुष्कर भी कहा जाता है। यह नगर दुर्ग के पास में स्थित है। यहॉ पर 15 दिवसीय पशु मेला जो बहुत ही विशाल मेला होता है, कार्तिक पूर्णिमा में लगता हैं।

श्री चामुण्डा देवी का मन्दिर जो मालपुा में स्थित हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

माशी बांध मनोहरपुरा– मिटटी का बना हुआ है। इसको 1981 ई. सन में बनाया गया था। इस बांध में पांच गेट है। बीसलपुर बांध– यह राजस्थान का दूसरा सबसे बड़ा बांध है। यह टोंक जिले को देवली तहसील के राजमहल में तीन नदियों, बनास, खारी, डाई के संगम पर बना हुआ है। यह राजस्थान का एक मात्र बांध ऐसा है जो कंकीर से बना हुआ है। यह राजस्थान की सबसे बड़ी जल पेयजल परियोजना हैं।

टोडरी सागर बांध– टोडरी सागर बांध के सभी गेट खोल देने पर एक बूंद भी जल नहीं बचता हैं।

ककोड़ का किला– यह टोंक से 20 किलोमीटर दूर एनएच–116 पर ककोड़ में एक ऊँची पहाड़ी पर बना हैं।

पचेवर का किला मालपुरा में स्थित हैं। बगड़ी का किला बागड़ी गांव निवाई में स्थित हैं।

हाथी भाटा– हाथी भाटा ककोड़ के पास 5 कि.मी. दूर गुमानपुरा गांव में विशाल पहाडत्री को काटकर बनाया गया है। हाथी है जो पाषाण कालीन निर्मित बताया गया हैं।

रक्ताचल पर्वत निवाई में भरगु ऋषि की गुफा, आदि भी स्थित हैं।

रियासत कालीन टोंक राज्य के परगने मध्य प्रदेश तक फैले हुये थे तथा उसकी राजधानी टोंक ही रही। जब से अब तक इस बस्ती और शहर टोंक के नाम से प्रसिद्ध हैं। रियासत काल की स्थापना के बाद भी इसका नाम बदला। टोंक की वार्षिक औसत वर्षा 61. 36 मि.मी. होती हैं।

18 अप्रैल 2015–टोंक राज्य शिकार कानून 1901 राजस्थान का वन एवं सम्पदा कई तोप तो आज भी सुरक्षित हैं।

टोंक के इतिहास से जुड़े प्राचीन खण्डरों से तीसरी शताब्दी के सिक्के मिले है।

जिले के 33 छोटे बड़े बांधों को जून के 23 दिन निकलने के बाद मानसून का इन्तजार है। इसके 30 बांध जल संसाधन विभाग व तीन बीसलपुर खण्ड परियोजना के अन्तर्गत आते है।

इस टोंक रियासत ने 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग नहीं लिया था।

सआदत अली खॉ टोंक के नवाब बने 27 दिसम्बर 2016 को पिण्डारी कौन थे? पिण्डारी (मराठी में पैढारी) दक्षिण भारत के युद्धप्रिय पठान सवार थे। ये पिण्डारी बड़े ही कर्मठ साहसी व वफादार थे। टटू उनकी सवारी थी। तलवार और भाले उनके अस्त्र थे। वे दलों में विभक्त थे और प्रत्येक दल में लगभग दो से तीन हजार तक सवार होते थे। योग्यता के आधार पर व्यक्ति को दल का सवार चुना जाता था। उसकी आज्ञा सर्वमान्य होती थी। पिण्डारियों में धार्मिक संकीर्णता नहीं थी। इनकी स्त्रियों का रहन–सहन हिन्दू स्त्रियों जैसा ही था। मराठों की अस्थायी सेना में उनका महत्वपूर्ण स्थान होता था।

पिण्डारी सरकार नसरू ने मुगलों के विरूद्व शिवाजी की सहायता की थी। पुनया ने उनके उत्तराधिकारियों का साथ दिया था। चिंगोदी तथा हूल के नेतृत्व में 15 हजार पिण्डारियों ने पानीपत के युद्ध में भाग लिया था। अन्तः में ये पिण्डारी मालवा में बस गये तथा सिंधिया शाही और होल्करशाही पिण्डारी कहलाने लगे थे।

गोरिल्ला युद्ध– गुरिल्ला या गैरीया शब्द छापा मार के शब्द में प्रयुक्त किया जाता है यह स्पेनिश भाषा का शब्द है। स्पेनिश भाषा में इसका अर्थ लघु युद्ध होता है। मोटे तौर पर छापामार युद्ध अर्द्ध सैनिकों की टुकड़ियों अथवा अनियमित सैनिकों द्वारा शत्रु सेना के पीछे आक्रमण करके लड़े जाते है। गोरिल्ला युद्ध वास्तविक युद्ध के अतिरिक्त शत्रुदल में आतंक फैलाने का कार्य भी करते है।

छापामारों को पहचानना कठिन है। इनकी कोई विशेष भूषा नहीं होती है। दिन के समय ये साधारण नागरिको ंकी तरह रहत है और रात को ये छिपकर आंतक फैलाते है। ये छापामार नियमित सेना को धोखा देकर कार्य करते हैं।

साधारण युद्धों की तरह छापामार युद्धों का भी प्रचलन हुअ। सबसे पहले छापामार युद्ध 360 वर्ष ईसवीं पूर्व चीन में सम्राट हुआंग से अपने शत्रु सीयाओं के विरूद्व लड़ा गया था। इसमें सीयाओं के विरूद्व लड़ा गया था। इसमें सीयाओं हार गया इंग्लैण्ड के इतिहास में छापा मार युद्व का वर्णन मिलता हैं।

भारत में सबसे पहले छापामार युद्व का प्रयोग महाराणा प्रताप ने अकबर के विरूद्व किया था। बाद में इनसे प्रेरित होकर छत्रपति शिवाजी महाराज ने मलेंछो के विरूद्व किया था।

संदर्भः– ग्रंथ सूची (नेट)

गुरिल्ला युद्व का लिखित इतिहास में विवरण चीन के युद्व रणनीति जेनख सून जू ने लिखा हैं। उन्होंने अपनी किताब में बार–बार शत्रु सेना की रणनीति समझकर उसके अनुरूप उनहे ंपरास्त करने की सलाह दी हैं।

वो पहले ही कहते है कि अगर शत्रु झट से उत्ताजित होता है तो उसे गुस्सा दिलाओं, और जब वह तैयार नही है तभी उस पर आक्रमण करों।

चीन में माओं जेदोंग और हो ची मिन्ह् ने श्री गुरिल्ला युद्व का पथ अपनाया था। उन्होंने युद्व की रणनीति में जनता के बीच प्रोपगैडा फैलाना, अपहरण, सेना के बेसों पर रेड़ करना पीछा करते हुए छुपकर और घात लगाकर वार करना सेना और सरकारी उच्च अधिकारियों पर सुनियोजित आक्रमण था लेकिन यह अलग–अलग चरणों में होता था।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

गुरिल्ला रणनीति खुफिया, घात, धोखे, तोड–फोड़ और जासूसी पर आधारित है। जो लम्बे समय तक चलके कम तीव्रता वाले टकराव के माध्यम से एक प्राधिकरण को कजोर करती है। यह गुरिल्ला युद्ध पद्धति एक अलोकप्रिय विदेशी या स्थानीय शासन के खिलाफ काफी सफल हो सकती है। उदाहरण के लिए क्यूबा क्रान्ति, अफगानिस्तान युद्ध और वियतनाम का युद्ध।

टोंक जिले में कुछ और भी प्रसिद्ध है टोंक जिला अपने चमड़े के उद्योग के लिए बहुत प्रसिद्ध है टोंक का नवाब एक पुस्तक प्रेमी था। जिसने अरबी तथा फारसी पाण्डुलिपियों की एक बड़े पुस्तकालय का निर्माण करवाया था। अरबी और फारसी अनुसंधान भी यहां पर स्थित हैं।

1930ई सन् में सआदत अली खॉ टोंक के नवाब बने।

वन संरक्षण की दिशा मं रियासत कालीन प्रयास 20वीं सदी के प्रारम्भ में कुछ राजाओं ने वनों के संरक्षण को समझा तथा शिकार गाहों के रूप में वनों को रक्षित किया। टोंक जिला शिकार कानून 1901, यह राजस्थान का वन एवं वन संरक्षण की दिशा में प्रथम संगठित प्रयास था।

टोंक– भारत कोश, ज्ञान का हिन्दी महासागर है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक विरासत, प्राकृतिक एवं वन्य जीव सम्पदा से भरपुर होने के बाद भी सरकारी अनदेखी सी टोंक जिला पर्यटकों को तरस रहा है। राजपूत (चौहान व सोलंकी) तथा मुस्लिम शासकों का शासित रहा टोंक जिला बूंदी, सवाई माधोपुर, जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा को सीमा से सटा है। इसके अलावा राष्ट्रीय राजमार्ग पर बसा हुआ है। यहॉ पर पर्यटन की भरपूर सम्भावनाएं हैं।

ककोड़ का किला, टोडारायसिंह के महल, बावड़ियों, पचेवर के किले, हाथी भाटा, हाड़ीरानी की बावड़ी, सुनहरी कोठी, ऐतिहासिक विरासत होने के साथ पयटन विकास की सम्भावनाएं रखते हैं।

धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से डिग्गी कल्याण गोकर्णेश्वर महादेव का मन्दिर जोधपुरिया देवधाम निवाई, धन्ना भगत की तपोस्थली, हिंगलाज माता मन्दिर चांदली धरणी घर मन्दिर माण्डकला टोंक जिले में स्थित हैं।

मेलों में पीपल व माण्डकला पशुमेला, डिग्गी कल्याण जी का मेला, जोधपुरिया का पशुमेला, आंवा का दड़ा महोत्सव पर्यटको को आकर्षिक करते हैं।

प्राकृतिक एवं नैसर्गिक सौन्दर्य स्थलों में राज्य का प्रसिद्ध बांध बीसलपुर, बीसलदेव मन्दिर बीसलपुर बायोरिजर्व पार्क, रानीपुा ककोड़ वन्य जीव क्षेत्र पर्यटकों को लुभा लेते हैं।

शैक्षणिक संस्थानों में देखे तो वनस्थली विद्यापीठख केन्द्रीय भेड़ अनुसंधान केन्द्र आविरा नगर, अरबी फारसी शोध संस्थान टोंक में है। जहां पर देश विदेश से लोग आते हैं।

हस्तशिल्प में टोंक की दरी, नमदें एवं गलीचे पर्यटकों क आकर्षण का केन्द्र बना हुआ हैं। सांस्कृतिक धरोहर के अन्तर्गत चारबेंत लोकगायन शैली, खेड़ा, सभ्यता, नगर फोर्ट, निवाई में रक्ताचाप पर्वत के पीछे रेतीले हिन्दू एवं नवाबी संस्कृति से अलग स्वरूप प्रदान करते हैं।

इस प्रकार टोंक की भौगोलिक स्थिति इसे एक पर्यटक केन्द्र बनाने की भरपुर सम्भावना उपलब्ध कराता है आवश्यकता है योजनाबद्व विकास कराने की जन प्रतिनिधियों व प्रशासनिक अधिकारियों की दृढ़ इच्छा शक्ति के अभाव में पर्यटन के मानचित्र पर टोंक अपनी उपस्थिति दर्ज नही करा सका हैं।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 7 Issue 7, July 2017,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

इन धरोहरों का संरक्षण जरूरी है। जर्जर होती ऐतिहासिक इमारतों एवं स्मारकों का संरक्षण आवश्यक हैं।

संदर्भः– ग्रंथ सूची (नेट)